



RESSA  
REASSURE YOUR LIFE

रेसा

# पुष्प - मंडी

PUSHPA-MANDI



"एकदम कैसे ना आये मेरी बातों से यारों,  
जैसे बरसों से एक ही फूल से जोखित की है।"



दिल भंगर दिला है तो कलस्ता-एराज भी खोगा  
जिंकहत-एगुल भी कहीं गुल से जुदा रहती है



पुष्प -मंछी

108

RESSA  
रसा



पूल ही पूला याद आते हैं  
आजकल जल भी गुस्सूर ते हैं



पुष्प-संडी

107



काँटों से गुजर जाता है रामन को क्या कर  
फूलों की सियासत से मैं बे-गना लकी हूँ



पुष्प-संज्ञी



मैं चाहता था कि उस को गुलाब पेश करूँ  
वो खुद गुलाब था उस को गुलाब क्या देता





पुष्प-संघी

105

RESSA  
रेसा



फूल तो फूल हैं भीड़ों से भाड़े रहते हैं  
कारे बे-कारे डिवागत ले ली रहते हैं



पूल ही पूल खिल उठे मुझ में  
कौन आया जिसे खगाली में



पुष्प-संडी



तुम्हारे हुए फूल का कहना है,  
तुम्हारे हुए जीवन का हर गम सहना है।







पुष्प -संछे  
103

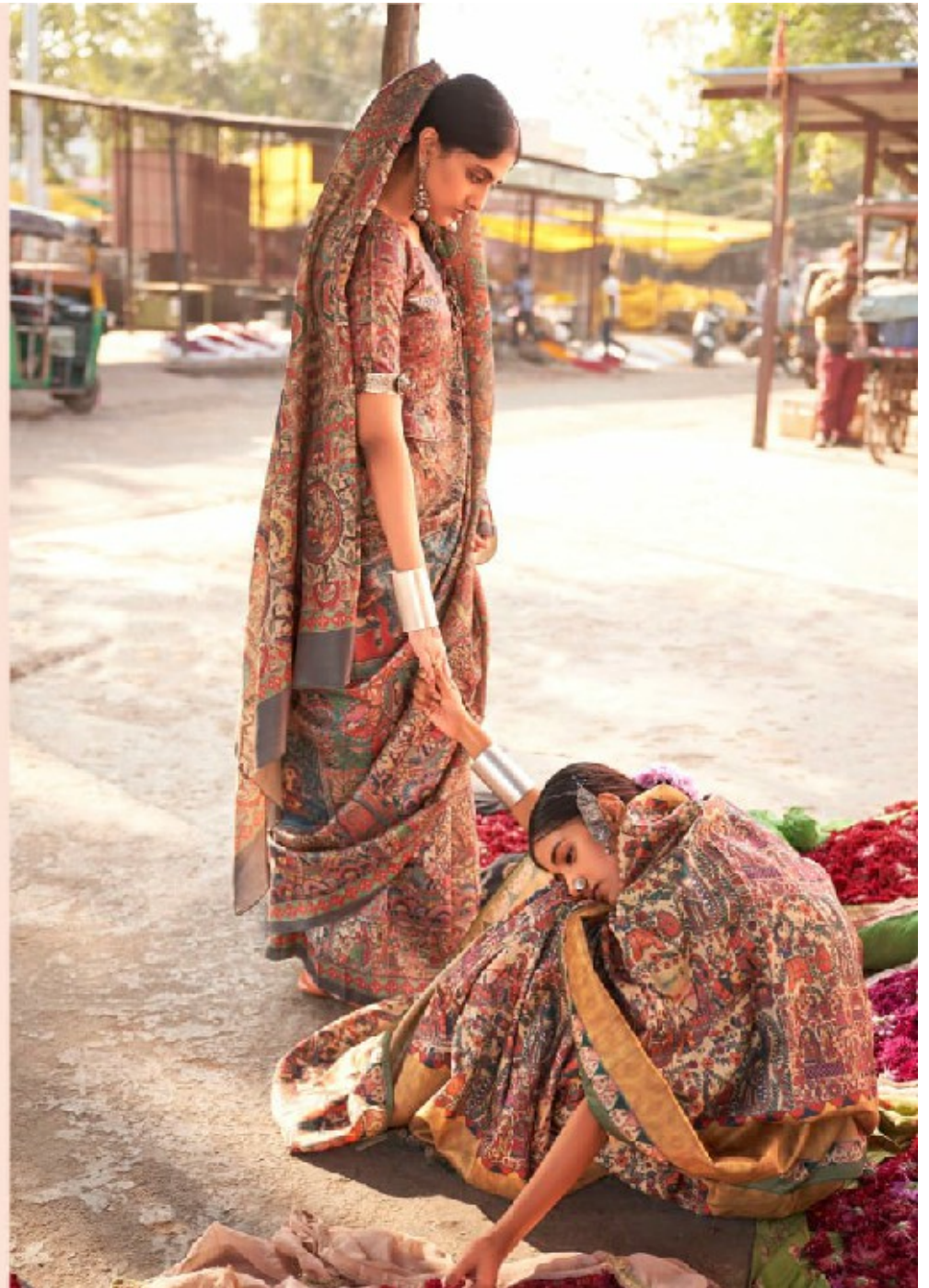


RESSA  
रेसा

जहसूस लो करत हे लगत पू लही सलते,  
तुम फूल लही, फूल की खुशाम् मि तह ली।



सदर नीले लोभी जी शोचनी तो देखिए  
इक फूल उसजे मेज दिया हे गुलाब का





पुष्प - मंडी  
102

RESSA  
रसा



लोटों से गिरा रहता है सारी रसक से फूल  
फिर भी खिलता रहता है, क्या खुदाविजाज है

RESSA  
रसा



इन जगह डिज़ाई है जिस फूल की स्ट्रुचर पर  
ये फूल जी लॉन्गों के बिल्लर पे डिज़ाई होना



पुष्प-संघी  
101



कई तरह के तहलक़ परों हैं उनको  
बाग़े ज़ी बाग़े वहाँ फूल से बिगड़ता है





पुष्प-संडी 101



पुष्प-संडी 102



पुष्प-संडी 103



पुष्प-संडी 104



पुष्प-संडी 105



पुष्प-संडी 106

RESSA  
रेशा



पुष्प-संडी 107



पुष्प-संडी 108

पुष्प-संडी  
PUSHPA-HANDI

फूल ही फूल सिल उठे जूझ में  
कौन आया सिरे लखातों में